जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

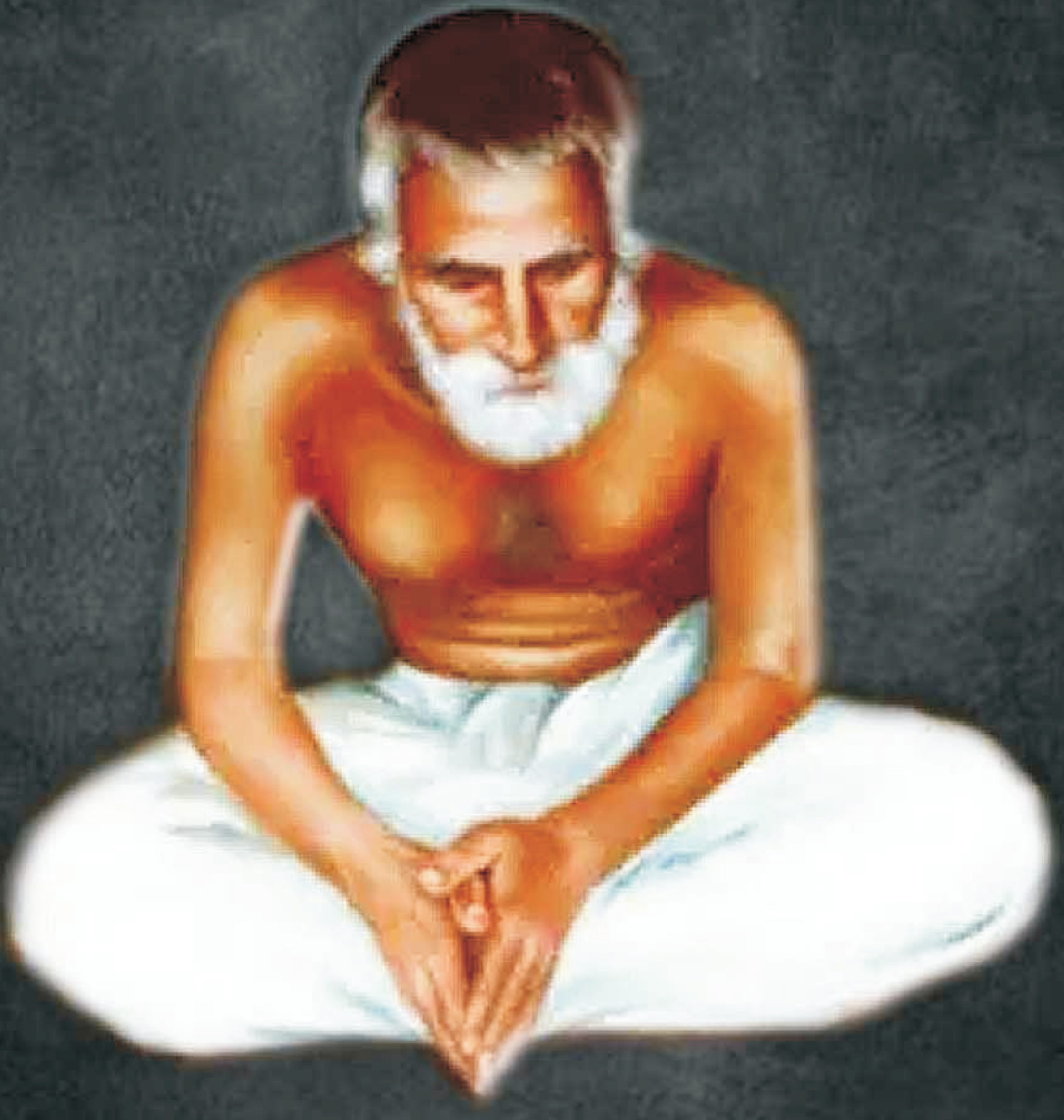

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर
जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

पण्डित बनने की इच्छा

'प***' ब्रह्मचारी नामक एक व्यक्ति श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास रहकर हरिभजन करने के लिए आया। उसको श्रील वावाजी महाराज ने कहा– तुम वैष्णवों के चरणों में अपराध परित्याग कर सत्संग में अनुक्षण हरिनाम करो।" 'प***' की इस बात में विशेष रुचि नहीं हुई। वह श्रील बाबाजी महाराज को न कहकर

राढ़देश में चला गया और अपना परिचय श्रील प्रभुपाद के शिष्य के रूप में देकर भागवत पाठ करके धन इकट्ठा करने लगा। वहाँ से वापिस आकर 'सु***' नाम के कोई पण्डित से व्याकरण पढ़ना आरम्भ किया। 'प***' ने सोचा था कि वह स्वयं मूर्ख है, इसलिए लिखना पढ़ना सीखने से उसका सम्मान बढ़ेगा। मन- मन में और भी सोचा कि बाबाजी महाराज लिखना-पढ़ना जानते नहीं है इसलिए विशेष कुछ बड़ा हो नहीं पाए। एक दिन जब 'प***'

श्रील बाबाजी महाराज के पास आया तो बाबाजी महाराजा ने 'प***' से कहा,–"तुम कनक, कामिनी और प्रतिष्ठा संग्रह करने के लिए व्याकरण पढ़ रहे हो।" 'प***' ने कहा, – "मेरी इस प्रकार की कोई बुरी इच्छा नहीं है। मैंने श्रीमद् भागवत का अर्थ समझने के लिए ही व्याकरण पढने की इच्छा की है।" तब श्रील बाबाजी महाराज ने कहा,– "राढ़देश में कथा वाचकों का भागवत व्यवसाय देखकर तुम्हें लोभ हो गया है,

तुम्हारा भाग्य खत्म हो गया है। मंगल चाहते हो तो इस प्रकार के अपराध का कार्य छोड़कर सत्संग में हरिभजन करो।” ‘प***’ ने श्रील बाबाजी महाराज का यह उपदेश सुना नहीं। और एक दिन ‘प***’ ने श्रील बाबाजी महाराज के पास आकर कहा,– “मेरे पर कृपा कीजिए।” बाबाजी महाराज कुछ क्षण चुप रहने के बाद कहने लगे,– “तुमने मन में जो वासना की है, उसे इस प्रकार से पूरी करने की चेष्टा मत करना।” श्रील बाबाजी महाराज

की इस बात को तब कोई भी नहीं समझ पाया। 'प***' के चले जाने के बाद बाबाजी महाराज ने पास बैठे लोगों से कहा– "किसी विधवा के साथ 'प***' का अवैध प्रेम है। {पास बैठे व्यक्तियों को लक्ष्य कर श्रील बाबाजी महाराज ने कहा} दूसरे को कभी भी पाप के रास्ते पर नहीं खींचना; आपके मन में यदि कभी भी अन्याभिलाष उत्पन्न हो तो उससे पहले मेरे पास एक बार दया कर आ जाना, हो सकता है उससे

आपका मन बदल जाए।

श्रील बाबाजी महाराज ने इसके द्वारा प्रकाशित किया कि पर-स्त्री गमन—जघन्यतम पाप और निषिद्ध आचरण है। कपटतापूर्वक बाहर से साधुत्व प्रकाश और छिप छिपकर व्यभिचार की अपेक्षा अधिक पाप और अपराधजनक है। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का, श्रील बाबाजी महाराज का और उनके निजजन ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद के चरित्र का यही

वैशिष्ट्य है कि वे कभी भी किसी प्रकार की कपटता का समर्थन नहीं करते थे।

श्रीलगुरुदेव